INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
दिल्ली
असतो मा सद्गमय

CTET

(CENTRAL TEACHER ELIGIBILITY TEST

प्राइमरी लेवल

HANDWRITTEN NOTES

भाग-4 बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

CTET

प्राथमिक स्तर (Primary Level)

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।
हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 4 बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)" (प्राथमिक स्तर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION (CBSE)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)" (प्राथमिक स्तर)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/hvnbp7

Online Order करें - https://shorturl.at/nM368

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2024)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	शिक्षा मनोविज्ञान	1
2.	बाल विकास व अभिवृद्धि	13
3.	बाल विकास की अवस्थाएं व सिद्धांत	16
4.	बाल विकास पर वंशानुक्रम व वातावरण का प्रभाव	32
5.	अधिगम व शिक्षण	36
6.	अधिगम स्थानान्तरण	53
7.	बाल केन्द्रित शिक्षा व राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005	56
8.	बुद्धि व मापन	59
9.	भाषा , चिंतन व तर्क	68
10.	सामाजिक निर्माण के रूप में लिंग	73
11.	व्यक्तित्व	75
12.	बालक कैसे सीखते हैं ?	83
13.	विशेष आवश्यकता वाले बालक	88
14.	अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयाँ	93
15.	अभिप्रेरणा व अभिरुचि	96
16.	मानसिक विकार व समायोजन	103
17.	मापन व मूल्यांकन	108
18.	क्रियात्मक अनुसन्धान	115
	अन्य महत्वपूर्ण तथ्य	116

अध्याय – I

शिक्षा मनोविज्ञान

शिक्षा :-

शिक्षा अंग्रेजी भाषा के शब्द Education का हिन्दी रूपान्तरण है। जो लेटिन भाषा के Educatum शब्द से बना है जिसका अर्थ अंतः निहित शक्तियों का विकास करना है / व्यवहार में परिवर्तन। शिक्षा संस्कृत के "शिक्ष" धातु से बना है जिसका अर्थ है 'सीखना'

शिक्षा का वास्तविक अर्थ – प्रकाशित करने वाली क्रिया।

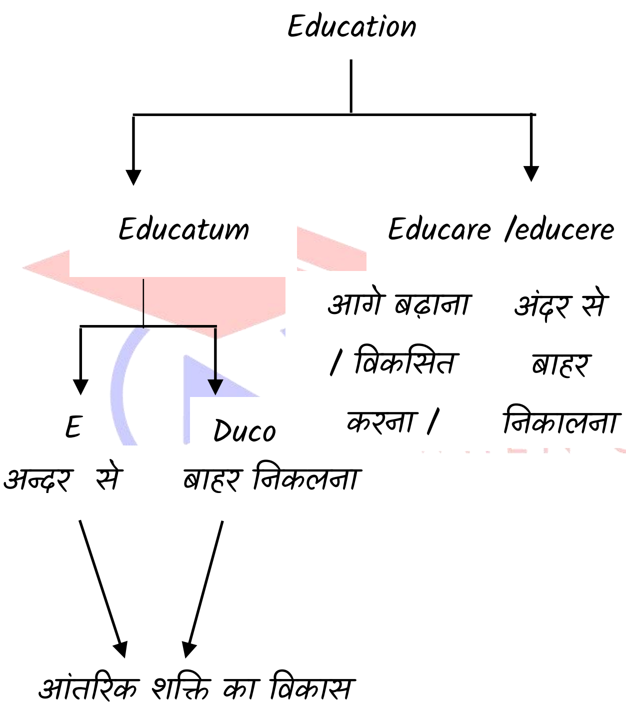

परिभाषाएं :-

- **स्वामी विवेकानंद :-** "मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।"
- **महात्मा गाँधी :-** "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा की सर्वोत्तम विकास की अभिव्यक्ति है।"
- **जॉन डी. वी :-** "शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह वातावरण के ऊपर नियंत्रण स्थापित करता है।"
- **डुनेविले के अनुसार :-** "शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव व अनुभव आ जाते हैं, जो बालक को जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।"
- **पेस्टोलॉजी -** "शिक्षा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, विरोधहीन तथा प्रगतिशील विकास है।"
- **अरस्तू –** शिक्षा का कार्य स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना है।"
- **प्लेटो –** शिक्षा व्यक्ति में शारीरिक , मानसिक , बौद्धिक परिवर्तन लाती है।"
- **जॉनलॉक-** जिस प्रकार फसल के लिए कृषि होती है उसी प्रकार से बालक के लिए शिक्षा होती है।
- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** "शिक्षा व्यक्तिकरण व समाजीकरण की प्रक्रिया है, जो व्यक्ति की उन्नति व समाज उपयोगिता को बढ़ावा देती है।
- **कॉलसेनिक के अनुसार-** "शिक्षा बालक में शारीरिक व मानसिक विकास करती है।"
- **रविचन्द्र टैगोर के अनुसार** -"शिक्षा वह ज्ञान है जो केवल सूचनाएं ही नहीं देता है अपितु मनुष्य के जीवन और उसके संपूर्ण वातावरण के प्रति तादम्य (समायोजन) स्थापित करता है।"

शिक्षा की विशेषताएं :-

- शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा सामाजिक व सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक दोनों रूप में हो सकती है।
- शिक्षा आदर्शात्मक / मूल्यात्मक है।

शिक्षा के प्रकार :-

1. औपचारिक - स्कूल
2. अनौपचारिक - परिवार
3. निरौपचारिक - पत्राचार

(i) औपचारिक शिक्षा – जिसका समय व स्थान निश्चित हो। जैसे – स्कूल में शिक्षा

(ii) अनौपचारिक शिक्षा – जिसका स्थान व समय निश्चित न हो, जीवन पर्यन्त चलती है, जैसे – परिवार, समाज में।

(iii) निरौपचारिक शिक्षा – दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार व खुले विद्यालय या कॉलेज द्वारा शिक्षा।

नोट :- जॉन डीवी ने पुस्तक शिक्षा एवं समाज में शिक्षा के तीन तत्त्व बताए जिन्हें त्रिमार्गीय प्रक्रिया कहते हैं -

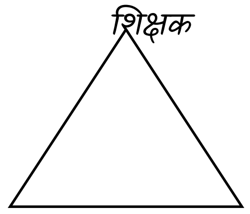

मनोविज्ञान का विकास / उत्पत्ति – प्लेटो , अरस्तू जैसे दार्शनिकों ने मानव मस्तिष्क को समझने व जानने के लिए तथा शरीर से उसका सम्बन्ध समझाने की कोशिश की ।

हिप्पो क्रेटिस ने सबसे पहले इस विचार का प्रतिपादन किया कि मस्तिष्क चेतना का केंद्र है तथा समस्त मानसिक रोगों के कारणों का विवेचन किया । जैसे – कला , रक्त , कफ व पीला पित्त

- सुकरात ने विचार दिया की मनुष्य को स्वयं के बारे में सोचना चाहिए । प्लेटो ने (ई. पूर्व 5 वीं - 4 वीं सदी) आत्मा ही परमात्मा का विचार दिया तथा अरस्तू ने 384 ई. पू. से 322 ई. में दर्शनशास्त्र में आत्मा का अध्ययन किया, यही आत्मा का अध्ययन आगे चलकर आधुनिक मनोविज्ञान बना, इसलिए अरस्तू को मनोविज्ञान का जनक माना जाता है तथा अरस्तू के काल से ही मनोविज्ञान जन्म माना जाता है ।

अर्थ -मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है, जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता है।

- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- 'मन का विज्ञान' अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।
- 'साइकोलॉजी' शब्द की उत्पति यूनानी(लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइके (Psyche) तथा लोगस(Logos) से मिलकर हुई है। 'साइके शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है, इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द " साइकोलॉजी " का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

दोस्तों, अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते हैं -

1. मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान- यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है, जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तु, देकार्ते, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकोलॉजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।

2. मनोविज्ञान मन / मस्तिष्क का विज्ञान - यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वी शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

3. मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान - यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा है जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुंट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना

11. शुद्ध मनोविज्ञान- यह क्षेत्र मनोविज्ञान के सैद्धांतिक पक्ष से संबंधित है और मनोविज्ञान के सामान्य सिद्धांतों, पाठ्य-वस्तु आदि से अवगत कराकर हमारे ज्ञान में वृद्धि करता है।

12. व्यवहृत / व्यावहारिक मनोविज्ञान- मनोविज्ञान की इस शाखा के अंतर्गत उन सिद्धांतों, नियमों तथा तथ्यों को रखा गया है जिन्हें मानव के जीवन में प्रयोग किया जाता है। शुद्ध मनोविज्ञान सैद्धांतिक पक्ष हैं, जबकि व्यवहृत मनोविज्ञान व्यावहारिक पक्ष हैं।

13. अपराध मनोविज्ञान - इस शाखा में अपराधियों के व्यवहारों, उन्हें ठीक करने के उपायों, उनकी अपराध प्रवृत्तियों, आदि का अध्ययन किया जाता है।

14. परामनोविज्ञान- यह मनोविज्ञान की नव विकसित शाखा है। इस शाखा के अंतर्गत मनोविज्ञान अतीन्द्रिय (Super-Sensible) और इन्द्रियेत्तर (Extra-Sensory) प्रत्यक्षों का अध्ययन करते हैं। अतीन्द्रिय तथा इन्द्रियेत्तर प्रत्यक्ष पूर्व-जन्मों से संबंधित होते हैं।

15. नैदानिक मनोविज्ञान -मनोविज्ञान की इस शाखा में मानसिक रोगों के कारण, लक्षण, प्रकार, निदान तथा उपचार की विभिन्न विधियों का अध्ययन किया जाता है। आज के युग में इस शाखा का महत्व दिन-प्रतिदिन बढता जा रहा है।

16. समाज मनोविज्ञान- समाज की उन्नति तथा विकास के लिए यह मनोविज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। समाज की मानसिक स्थिति, समाज के प्रति चिंतन आदि का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान में होता है।

17. किशोर मनोविज्ञान- मनोविज्ञान की इस शाखा के अंतर्गत किशोरों की मानसिक स्थिति, संवेग, रुचियां, अभिवृत्तियां, समस्याएं एवं शारीरिक विकास आदि के संबंध में अध्ययन किया जाता है।

<u>शिक्षा मनोविज्ञान -</u>

मनोविज्ञान के सिद्धांतों को शिक्षा के क्षेत्र में लागू करना ही शिक्षा मनोविज्ञान हैं।

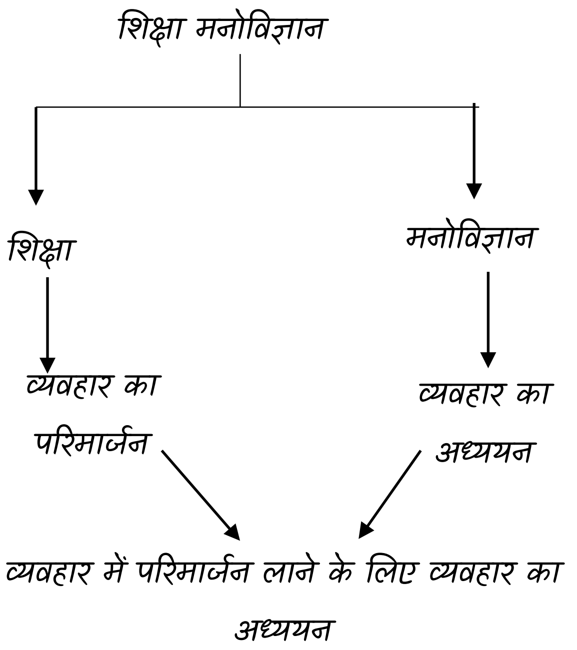

शिक्षा मनोवज्ञान की उत्पत्ति –

- शिक्षा मनोविज्ञान के जनक – थार्नडाईक हैं इनपर प्रकृति वादी रुसो का प्रभाव था ।
- रूसो की बुक emil में लिखा था – बालक एक पुस्तक के समान होता है अतः शिक्षक को उसे मद्योपांत तक पढ़ना चाहिए ।
- अमेरिकी शिक्षा शास्त्री जॉन डी. वी. के प्रयोसों से शिक्षण -प्रशिक्षण शुरू हुए ।
- भारत में शिक्षण -प्रशिक्षण का कार्य – 1920 में शुरू हुआ ।
- कॉलसनिक के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म प्लेटो से हुआ।
- स्किनर के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म अरस्तू से हुआ।
- शिक्षा मनोविज्ञान को लोकप्रिय / प्रचलित बनाने का कार्य रुसों व फ्रोबेल ने किया।
- रुसों का शिक्षा पर लिखा गया प्रसिद्ध ग्रंथ- 'एमील (Emile)'है।
- शिक्षा मनोविज्ञान को मनोवैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने वाले विद्वान पेस्टोलॉजी एवं हरबर्ट हैं।

वस्तुनिष्ठ विधियां

1. प्रयोगात्मक विधि

- इस विधि के समर्थक विलियम वुण्ट, टिचनर हैं।
- पूर्व निर्धारित दशाओं के आधार पर मानव व्यवहार का अध्ययन करना ही प्रयोगात्मक विधि है।
- जेम्स ड्रेवर के अनुसार प्रयोगात्मक विधि के बिना मनोविज्ञान अधूरा है।
- इस विधि द्वारा मानव तथा पशुओं के व्यवहार का अध्ययन किया जा सकता है।
- इस विधि से प्राप्त निष्कर्ष विश्वसनीय तथा प्रामाणिक होते हैं।
- इसे अनुसंधान की सर्वोतम विधि मानते हैं।

इस विधि के दोष :- समय तथा स्थान की कमी रहती है। इससे मानसिक दशा का ज्ञान असम्भव है। यह खर्चीली विधि है।

2. जीवन इतिहास विधि

- इसे व्यक्ति इतिहास विधि भी कहते हैं।
- इस विधि के प्रवर्तक टाइडमैन हैं।
- इसमें व्यक्ति के विशिष्ठ व्यवहार अर्थात् असामान्य व्यवहार के कारणों की खोज की जाती है।
- इसे निदानात्मक विधि भी कहते हैं।
- इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग चिकित्सा के क्षेत्र में हुआ।

3. उपचारात्मक विधि- यह विधि बालकों के आचरण सम्बन्धी जटिलताओं को दूर करने में तथा पिछड़े बालकों के सुधार हेतु उपयोगी है।

4. विकासात्मक विधि- इसे आनुवंशिक या उत्पत्तिमूलक विधि भी कहते हैं।

- इसमें बालक की वृद्धि तथा विकास का अध्ययन किया जाता है।
- इसमें बालक के जन्म से वृद्धवस्था की अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।

5. मनोविश्लेषण विधि- इसके समर्थक सिग्मंड फ्रायड हैं।

- इसमें व्यक्ति के अचेतन मन का अध्ययन किया जाता है।

6. तुलनात्मक विधि

- इसमें व्यवहार सम्बन्धी समानताओं तथा असमानताओं का अध्ययन किया जाता है।

7. सांख्यिकी विधि

- इसमें बालक की समस्या से सम्बन्धित तथ्य एकत्रित करके परिणाम निकाले जाते हैं।

8. साक्षात्कार विधि

- किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गयी बातचीत को साक्षात्कार कहते हैं।
- यह बालकों की संवेदना तथा अभिवृद्धि को जानने हेतु सर्वाधिक उपयुक्त विधि है।

साक्षात्कार लेने के तीन तरीके हैं-

1.संरचित साक्षात्कार- इसमें प्रश्न पूर्व में निर्धारित होते हैं।

2.असंरचित साक्षात्कार- इसमें प्रश्न पूछने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

3.अर्द्धसंरचित साक्षात्कार- इसमें प्रश्न पूछने का विषय निर्धारित होता है और प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता होती है।

9. विभेदात्मक विधि

- इस विधि में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन तथा उनका सामान्यीकरण किया जाता है।

10. मनोभौतिक विधि

- इस विधि में मन तथा शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

11. निरीक्षण या बर्हिदर्शन विधि

- इस विधि के प्रतिपादक जे.बी.वॉटसन हैं।
- व्यवहार का निरीक्षण करके मानसिक दशाओं को जानना ही बहिर्दर्शन विधि है।
- इस विधि में व्यवहार को देखकर अध्ययन किया जाता है।
- इसे अवलोकन विधि या प्रेक्षण विधि भी कहते हैं।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 4

बाल विकास पर वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव

वंशानुक्रम बच्चे के पोषण के बीज है, जबकि वातावरण पोषण है।

बी. एन. झा के अनुसार - जन्मजात विशेषताओं का कुल योग वंशानुक्रम कहलाता है।

डगलस एवं हॉलैण्ड के अनुसार - बच्चे शारीरिक बनावट, शारीरिक विशेषता तथा क्षमताएँ जो अपने माता - पिता से प्राप्त करते हैं , वंशानुक्रम कहलाता है।

जेम्स ड्रेवर के अनुसार - माता - पिता का शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का स्थानान्तरण वंशानुक्रम कहलाता है।

वुडवर्थ के अनुसार - गर्भधारण के समय या जन्म से पूर्व बच्चे में Speacial गुण का स्थानान्तरित होना ही वंशानुक्रम कहलाता है।

वुडवर्थ के अनुसार- वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती हैं जो जीवन के आरंभ के समय नही पूर्व में ही गर्भधारण के समय उपस्थित थी।

सोरेन्सन के अनुसार-पित्रैक बच्चों की प्रमुख विशेषताओ एवं गुणों को निर्धारित करते हैं।

A) बालक के जन्म एवं विकास में वंशक्रम की भूमिका :-

माता – पिता से पीढ़ी दर पीढ़ी गुणों का संतानों में आगमन ही वंशक्रम है ।

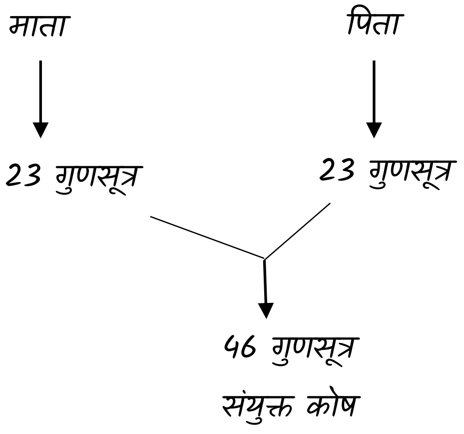

- माता-पिता के संयोग से गुणसूत्रों का स्थानान्तरण होता है जिससे जीवन की शुरुआत होती है।
- एक मानव कोशिका में 46 गुणसूत्र होते हैं जिनमे से 23 गुणसूत्र माता तथा 23 पिता के होते हैं ।
- सबसे पहले माता –पिता की ओर से आने वाले 23-23 गुणसूत्र / जनन कोष मिलकर एक संयुक्त कोष (जायगोट) का निर्माण करते हैं इसी जायगोट से मानव जीवन की शुरुआत होती है।
- मानव जीवन की शुरुआत एक कोशिका के रूप में होती है ।

शरीर एवं लिंग निर्धारण में भूमिका :-

- माता – पिता की ओर से आने वाले 22-22 गुणसूत्र काय गुणसूत्र कहलाते हैं तथा 1-1 गुणसूत्र लिंग गुणसूत्र कहलाते हैं जो लिंग का निर्माण करते हैं । अर्थात दोनों के मिलाकर 44 गुणसूत्र काय गुणसूत्र कहलाते हैं जो शरीर का निर्माण करते हैं तथा 2 गुणसूत्र लिंग गुणसूत्र होते हैं जो लिंग का निर्माण करते हैं ।

बालक – बालिका के निर्धारण में – बालक व बालिका होने की सम्भावना 50% होती है।

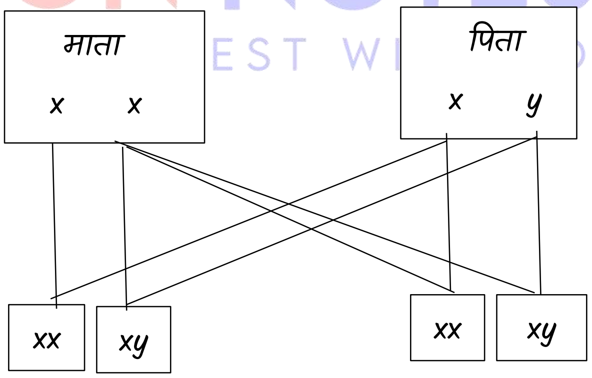

- x x गुणसूत्र माता में तथा xy पिता में पाये जाते हैं ।
- x x गुणसूत्र सदैव लम्बे तथा x y बौना / गोल गुणसूत्र होता है ।
- बालक या बालिका के जन्म के निर्धारण में पिता के गुणसूत्र (xy) जिम्मेदार होते हैं क्योंकि माता के गुणसूत्र (xx) हमेशा समान होते हैं ।

xx – बालिका

xy – बालक

✓ **डाउन सिंड्रोम** – मंदबुद्धि बच्चों के जन्म के लिए जिम्मेदार होता है , इसमें । गुणसूत्र की संख्या बढ़ जाती है 46 से 47 हो जाते हैं ।

✓ **टर्नर सिंड्रोम** – ये लक्षण केवल महिलाओं में होता है जिसके कारण गर्दन सम्बन्धी विकार हो जाता है इसमें । गुणसूत्र की संख्या घट जाती है और ये गुणसूत्र 46 से 45 हो जाते हैं ।

मानव जीवन की शुरुआत –आनुवांशिकता की मूलभूत इकाई - जीन्स होते हैं।

जीन ⟶ गुणसूत्र ⟶ कोशिका

अन्य क्षेत्रों में वंशक्रम की भूमिका :-

1. शरीर की संरचना , कद एवं रंग – रूप में
2. मानसिकता के निर्माण में
3. परिपक्वता के विकास में
4. मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य में
5. कार्य , व्यवसाय एवं व्यवहार में
6. वैचारिक / संवेगात्मक / नैतिक एवं अभिवृद्धि के क्षेत्र में ।

B) बालक के विकास में वातावरण की भूमिका :-

एक बालक के विकास में प्राकृतिक एवं सामाजिक कारकों का जो प्रभाव देखा जाता है उसे वातावरण कहते हैं ।

वुडवर्थ – वे सभी तत्व जो जन्म से ही हमें प्रभावित करते हैं वातावरण है ।

जिम्बर्ट – वे सभी वस्तुएं जो हमें चारों और से घेरे हैं एवं जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते हैं , वातावरण कहलाता है ।

वंशानुक्रम के सिद्धांत -

1. **बीजकोशिकीय निरंतरता का सिद्धांत - इस** सिद्धांत का प्रतिपादन बीजमेंन नामक मनोवैज्ञानिक ने किया था। बच्चे के निर्माण में जो जीवाणु भाग लेते हैं वे कभी नष्ट नहीं होते हैं। इस कारण ये अपने गुणों को बरकरार रखते हैं।

   इस सिद्धांत में बीजमेन ने चूहों पर प्रयोग किया

2. **समानता का सिद्धांत** – यह सिद्धांत सोरेंसन ने दिया । सभी प्राणी अपने समान संतान उत्पन्न करते हैं। जैसे – पशु, पशुओ के समान तथा मनुष्य अपने अनुरूप ही सन्तान उत्पन्न करते हैं।

3. **जैवसंख्यिकी सिद्धांत**- इसके प्रतिपादक फ्रांसीसी गाल्टन है। इस सिद्धांत के अनुसार ऐसा जरूरी नहीं है, कि बच्चे सारे गुण अपने माता - पिता से ही प्राप्त करें कुछ गुण वे अपने पूर्वज से भी लेते हैं। ये पूर्वज मातृपक्ष अथवा पितृपक्ष दोनों हो सकते हैं।

4. **अर्जित गुण के अवितरण का सिद्धांत** - कुछ ऐसे अर्जित गुण होते हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरण नहीं होते हैं।

5. **अर्जित गुण वितरण का सिद्धांत** - इस सिद्धांत के प्रतिपादक लैमार्क हैं। इसमें यह बताया गया कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरण होता है। लेकिन डार्विन इनके विपरीत बोले कि नहीं उसको अपनी समस्या के अनुकूल सामंजस्य करना पड़ेगा।

   लैमार्क –ने कहा कि जीव में अपनी जरुरत को पूरा करने और अपने पर्यावरण के अनुकूल होने की आन्तरिक इच्छा होती है। ये आंतरिक इच्छा इनकी प्राकृतिक आदतों को बदलती है।

   लेमार्क ने जिराफ की गर्दन का उदहारण प्रस्तुत किया कि प्रारम्भ में जिराफ की गर्दन छोटी होती थी परन्तु परिस्थिति के साथ लम्बी होने लगी और वर्तमान में उनकी संतानों में ऐसा देखा जा रहा है।

6. **मौलिक गुणों का सिद्धान्त**-

- इसका प्रतिपादन मेण्डल ने किया।
- यह प्रयोग मटर के दानों पर किया गया था। इसका आधारभूत नियम आनुवांशिकता है।
- इसके वर्ण संकरता से एक या दो पीढ़ी में कुछ बदलाव कर सकते हैं परन्तु तीसरी पीढ़ी आते-आते इसमें वास्तविक गुण प्रकट होने लग जाते हैं।

वातावरण के प्रकार - वातावरण के दो प्रकार के होते हैं :-

1. आन्तरिक वातावरण 2. बाह्य वातावरण

1. **आन्तरिक वातावरण** - आन्तरिक वातावरण से तात्पर्य जन्म से पूर्व अथवा गर्भावस्था होता है। यह स्थिति बच्चों के विकास को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए अगर माता धूम्रपान करती है, तो बच्चे का विकास रुक जाता है।

2. **बाह्य वातावरण** - बाह्य पर्यावरण चार प्रकार का होता है :-

(क) भौतिक पर्यावरण

(ख) आर्थिक पर्यावरण

(ग) सामाजिक पर्यावरण

(घ) सांस्कृतिक पर्यावरण

बालक पर वातावरण का प्रभाव

(1) शारीरिक अंतर पर प्रभाव - इस प्रभाव की व्याख्या फ्रेंज बोन्स नामक मनोवैज्ञानिक ने की थी। इन्होंने एक अध्ययन करके बताया था कि जापानी और यहूदी जो लम्बे समय से अमेरिका में निवास कर रहे हैं उनकी लम्बाई में वृद्धि देखी गई ये सब पर्यावरण के कारण होता है आनुवंशिकता के कारण नहीं ।

(2) मानसिक विकास पर प्रभाव - इस प्रभाव की व्याख्या गोडार्ड नामक व्यक्ति ने की थी इनका मानना था कि सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण न मिलने पर उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है।

(3) प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव - इस सिद्धांत की व्याख्या क्लार्क ने की थी। इनके अनुसार श्वेत प्रजाति के लोग अश्वेत प्रजाति की तुलना में तेज होते हैं।

(4) बुद्धि पर प्रभाव - इस सिद्धांत की व्याख्या केंडोल महोदय ने की थी। इस पर अपना मनतव्य स्टीफैंस ने दिया था। इनके अनुसार अच्छे वातावरण वाले बच्चे की बुद्धि - लब्धि ऊँची होती है।

(5) अनाथ बच्चों पर प्रभाव - वुडवर्थ का मानना था कि अनाथालय में पलने वाले बच्चे अपने माता - पिता से कई गुणा अच्छे थे क्योंकि वहां उन्हें अच्छा माहोल दया गया ।

(6) जुड़वा बच्चे पर प्रभाव - इस सिद्धांत के प्रतिपादक न्यूमैन, फ्रीमैन और होलजिंगर थे। उन्होंने इस बात को साबित करने के लिए 20 जोड़े जुड़वा बच्चों को अलग - अलग वातावरण में रखकर उनका अध्ययन किया। उन्होंने एक जोड़े के एक बच्चे को गाँव के फार्म पर और दूसरे को नगर में रखा। बड़े होने पर दोनों बच्चों में पर्याप्त अन्तर पाया गया । फार्म का बच्चा अशिष्ट चिन्ता ग्रस्त और बुद्धिमान था। उसके विपरीत नगर का बच्चा, शिष्ट चिन्तामुक्त और अधिक बुद्धिमान था।

<u>प्रमुख वातावरणीय कारक / घटक</u>

(1) जन्म स्थान - किसी भी बालक का विकास उसके जन्म स्थान से प्रभावित होता है।

(2) जन्मक्रम - मध्य जन्म क्रम के बालक का विकास अच्छा होता है, प्रथम एवं अंतिम बालक की अपेक्षा।

(3) परिवार का वातावरण - बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास को प्रभावित करता है।

(4) विद्यालय का वातावरण

(5) सामाजिक वातावरण

(6) पोषण

(7) मित्र मण्डली

(8) खेल-मैदान

(9) भौगोलिक वातावरण

(10) बुद्धि का प्रभाव

(11) शिक्षा का प्रभाव

(12) अधिगम व परिपक्वता

अध्याय-13

विशेष आवश्यकता वाले बालक

विशिष्ट बालक - वे बालक जो अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, व्यवहार तथा व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं की दृष्टि से अपनी आयु के बालकों से भिन्न होते हैं ,विशिष्ट बालक कहलाते हैं ।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, "वह बालक, जो मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और संवेगात्मक आदि विशेषताओं में औसत से विशिष्ट हो और उसे अपनी विकास की उच्चतम सीमा तक पहुँचने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता हो उसे विशिष्ट बालक कहते हैं।

- वह बालक जो सामान्य बालक की अपेक्षा कुछ अलग प्रकार का व्यवहार करते हैं, विशिष्ट बालक की श्रेणी में आते हैं । इन बालकों की योग्यता और क्षमताओं का विकास करने के लिए विद्यालय गतिविधियों में परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है ।

विशिष्ट बालकों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है -

1. प्रतिभाशाली बालक -

इन बालकों की बौद्धिक क्षमताएँ तथा योग्यताएँ सामान्य बालक की अपेक्षा अत्यधिक तीव्र होती है ।

प्रतिभाशाली बालक के लक्षण :-

1. बुद्धि लब्धि 140 से अधिक होती है ।
2. एक समय में एक से अधिक विषयों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं ।
3. इनकी रुचियाँ तथा जिज्ञासा व्यापक होती हैं ।
4. यह अपने स्तर के पाठ्यक्रम को बिना किसी सहायता के पूरा कर लेते हैं ।
5. नवीन खोज करते हैं ।
6. अपने से उच्च स्तर की समस्याओं का स्वयं समाधान कर लेते हैं ।
7. कार्यों के प्रति सकारात्मक
8. मिलनसार , सहयोगी होते है ।

अध्यापक तथा विद्यालय द्वारा इन बालकों के लिए किए जाने वाले उपाय -

1. अध्यापक इस प्रकार के बालकों के लिए इनके स्तरानुसार अतिरिक्त कार्य का चुनाव करके इन्हें उपलब्ध कराएँ जिसका समाधान यह अपने स्तर पर कर सकें ।

2. प्रत्येक विद्यालय में प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन किया जाना चाहिए । प्रतिभाशाली बालकों का चयन करके उन्हें अकादमिक नेतृत्व प्रदान करना चाहिए ।

3. विद्यालय समय सारणी में इस प्रकार के बालकों के लिए अतिरिक्त कालांश की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे समय पर इन्हें मार्गदर्शन देकर इनकी समस्याओं का समाधान किया जा सके ।

4. विद्यालय में व्यक्तित्व नेतृत्व व परामर्श व्यवस्था होनी चाहिए ।

5. इस प्रकार के बालकों को कक्षा में क्रमोन्नती प्रदान कर देनी चाहिए ।

- प्रतिभाशाली बालकों को पढ़ाने की सर्वश्रेष्ठ विधि अनुसंधान विधि है ।

- प्रतिभाशाली बालकों को चिंतन स्तर का शिक्षण कार्य करवाना चाहिए ।

2. पिछड़े बालक

वह बालक जो अपनी आयु स्तर से एक स्तर नीचे के कार्यों को अच्छी तरह से संपन्न नहीं कर पाते है। पिछड़े बालकों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है -

- **सामान्य पिछड़े :-** वें बालक जो अपने पाठ्यक्रम के अधिकांश विषयों में कम अंक अर्जित करते हैं,

वें बालक सामान्य पिछड़े बालक की श्रेणी में आते हैं।

- सामान्य पिछड़े बालक की बुद्धि लब्धि - 85 के आसपास होती है ।
- ये बालक लंबे समय तक किसी विषय-वस्तु का अध्ययन नहीं कर सकते हैं ।
- इन्हें जटिल विषय-वस्तु समझ में नहीं आती है।
- इनकी जिज्ञासा में रुचियाँ कम होती हैं ।
- ये किसी समस्या का सरलता से समाधान नहीं कर पाते हैं ।

अध्यापक तथा विद्यालय द्वारा इन बालकों के लिए किए जाने वाले उपाय -

1. विद्यालय में कालांश की अवधि छोटी होनी चाहिए (15-20 मिनट) ।

2. इस प्रकार के बालकों के लिए समूह शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए ।

3. विद्यालय में हस्तलिखित पुस्तकों की व्यवस्था होनी चाहिए ।

4. इस प्रकार के बालकों के लिए विद्यालय में व्यक्तिगत निर्देशन तथा परामर्श की व्यवस्था होनी चाहिए ।

- **विशिष्ट पिछड़े बालक**

1. वें बालक जो अपने पाठ्यक्रम के कुछ विषयों में कम अंक अर्जित करते हैं, विशिष्ट पिछड़े बालक की श्रेणी में आते हैं ।

2. इस प्रकार के बालकों को निदानात्मक परीक्षण के माध्यम से पता लगाकर इनकी समस्याओं के समाधान का समुचित प्रयास करना चाहिए ।

3. विद्यालय में अधिकांश बालक विशिष्ट पिछड़े होने पर इन बालकों के लिए अतिरिक्त कक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए ।

4. कुछ बालकों के विशिष्ट पिछड़े होने पर उनके लिए व्यक्तिगत निर्देशन और परामर्श की व्यवस्था होनी चाहिए ।

- **शारीरिक पिछड़े बालक**

1. वे बालक जो शारीरिक अंगों में कमी तथा ज्ञानेन्द्रिय दोष के कारण सामान्य बालक की अपेक्षा पिछड़े होते हैं, वें शारीरिक पिछड़े बालक की श्रेणी में आते हैं ।

2. इस प्रकार के बालकों को समायोजन की समस्या आती है, अर्थात् इनकी सबसे बड़ी समस्या है कि यह समायोजन नहीं कर पाते हैं यह मानसिक द्वन्द के कारण विद्यालय से पलायन कर जाते हैं ।

3. अध्यापक को इनके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करके इनके तथा इनके साथियों के विचारों में परिवर्तन करके इन्हें समायोजित करने का प्रयास करना चाहिए ।

- **मानसिक पिछड़े बालक (मंद बुद्धि)**

1. वे बालक जो सामान्य बालक की अपेक्षा मानसिक रूप से अत्यधिक विकसित होते हैं , मानसिक पिछड़े बालक की श्रेणी में आते हैं ।

2. इस प्रकार के बालकों को इनके लिए निर्मित अतिरिक्त विद्यालय में प्रवेश दिलाना चाहिए ।

3. मंद बुद्धि बालकों को मंगोलिज्म की संज्ञा दी जाती है।

3. <u>समस्यात्मक बालक</u>

वें बालक जो सामान्य बालक की अपेक्षा अत्यधिक असमानता दर्शाते हैं समस्यात्मक बालक की श्रेणी में आते हैं ।

ये निम्न प्रकार के होते हैं :-

i. **आक्रामक बालक**

- यह उद्दंड स्वभाव के होते हैं ।
- कक्षा में कानाफूसी करते हैं ।
- अभद्र भाषा का प्रयोग करना ।
- बड़ों का सम्मान नहीं करना ।

'नव निर्माण ','नव रचना ' या 'मौलिक रचना ' होता है ।

क्रो एवं क्रो – सृजनात्मक नवीन परिणामों के उत्पादन एवं अभिव्यक्ति करने की क्रिया है ।

जेम्स ड्रेवर – सुनिश्चित नवनिर्माण ही सृजनात्मकता है ।

सृजनशीलता / सृजनात्मकता के लक्षण –

- अपसारी चिंतन पाया जाता है ।
- सृजनशील बालकों की बुद्धि लब्धि 110 होती है ।
- ये मिलनसार होते हैं तथा विनोद प्रिय होते हैं ।
- इनमे उच्च समायोजन क्षमता होती है ।
- उच्च आकांक्षा स्तर होता है ।
- सहयोग की भावना व उत्साही प्रवृति के होते हैं ।
- समस्या समाधान के गुण होते हैं सृजनशील बालकों में ।
- ये अधिक कल्पनाशील होते हैं ।

सृजनात्मकता की उपयोगिता –

यह बालक को मौलिक परिणाम देने वाली बनाती है ।

सृजनशील बालकों को संगीत , नृत्य , साहित्य सृजन , खेल व अन्य रचनात्मक कार्यों में सफल बनाती है ।

सृजनात्मकता से सम्बंधित तथ्य –

- एक बालक में लगभग 3 वर्ष की आयु तक (शैशव अवस्था) सृजनात्मकता प्रारंभ हो जाती है तथा 30 वर्ष की आयु में पूर्ण चरम सीमा पर होती है तथा 60 वर्ष की आयु में वापस लगभग समाप्त हो जाती है ।
- बालक में इसके विकास हेतु कुछ नया करने तथा समस्या समाधान जैसे कार्य उन्हें देने चाहिए ।
- जिन परिवारों के बालकों को हौंसला / प्रोत्साहन मिलता है वे बालक सृजनशील होते हैं ।
- अरस्ते नामक विद्वान के अनुसार एक बालक को जब मानसिक रूप से दबाव में रखा जाता है , उसकी इच्छाओं का दमन किया जाता है तो ऐसी स्थिति में उसकी सृजनात्मकता नष्ट हो जाती है।

सृजनशीलता का मापन – सृजनात्मकता को मापने का प्रयास गिलफर्ड ने किया था । इसके आलावा जेक्सन व टॉरेन्स ने भी सृजनात्मकता को मापने के लिए परीक्षण किये भारत में पासी व बाकर मेहंदी ने परीक्षण किये ।

टॉरेन्स का सृजनात्मक परीक्षण -

शाब्दिक	**अशाब्दिक**
1. टिन के डिब्बे का उपयोग परीक्षण	1. चित्र पूर्ती परीक्षण
2. उत्पाद उन्नयन परीक्षण	2. वृत्त परीक्षण

note:- इस परीक्षण में समय अवधि 10 मिनिट होती है ।

बाकर मेहंदी परीक्षण –

शाब्दिक	**अशाब्दिक**
1. परिणाम परीक्षण	1. चित्र निर्माण
2. असामान्य प्रयोग परीक्षण	2. रेखा आकृति पूर्ती
3. उत्पाद सुधार परीक्षण	
4. नये संबंधो का पता लगाना	

note :- इस परीक्षण की समय सीमा 50 मिनिट होती है।

5. अलाभान्वित व वंचित बालक –

जो बालक सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक रूप से पिछड़े होते है तथा अन्य वर्गों के समान सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पाते, वे वंचित बालक कहलाते है। इनमें दूर -दराज के ग्रामीण क्षेत्रों के जनजातीय बालक शामिल होते है।

ऐसे बालकों को सामाजिक, आर्थिक, मानसिक व शारीरिक विकास के अवसर नहीं मिल पाते ।

वंचित बालकों की विशेषतायें / पहचान-

- शैक्षिक उपलब्धि का निम्न स्तर
- आत्मविश्वास की कमी व उदासीन
- कक्षा में अनुपस्थित रहना

सतत एवं समग्र मूल्यांकन का आयोजन कब और क्यों किया जाता है ?

मूल्यांकन शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति व् उसकी कार्य प्रणाली में सुधार की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है, इसलिए शिक्षा में मूल्यांकन महत्वपूर्ण घटक होता है।

सतत एवं मूल्यांकन को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड्स नए कक्षा 9 में अक्टूबर 2009 से, जबकि कक्षा 10 में सत्र 2010 – 11 से लागू किया।

कब :

शैक्षणिक निष्पत्तियों का मूल्यांकन – प्रत्येक शैक्षिक वर्ष को दो अवधियों में विभाजित किया जाता है –

प्रथम सत्र (जुलाई से अक्टूबर) – विद्यालय स्तर पर

द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च) – मूल्यांकन बोर्ड स्तर पर

सह - शैक्षणिक निष्पत्तियों का मूल्यांकन – इसके अंतर्गत विभिन्न जीवन कौशलों, अभिवृत्तियों, मूल्यों, शारीरिक व् स्वास्थ शिक्षा को सम्मलित किया जाता है।

मूल्यांकन की प्रविधियां

- गुणात्मक
  - प्रश्नावली (वुडवर्थ)
  - समजमिति
  - पड़ताल सूचि
  - साक्षात्कार
  - संचयी आलेख
  - रेटिंग स्केल
  - निरीक्षण विधि (वाटसन)
  - घटना वर्त
  - व्यक्ति इतिहास (टाइडमेन)
- परिणात्मक
  - लिखित
  - मौखिक
  - प्रायोगिक परीक्षण
    1. निबंधात्मक
    2. लाघुतरात्मक
    3. आति लघुतरात्मक
    4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न
       - प्रत्या स्मरण
         - साधारण व रिक्त स्थान पूर्ती
       - प्रत्याभिज्ञान प्रश्न
         - सत्य –असत्य
         - मिलान प्रश्न
         - बहु विकल्प प्रश्न
         - अनुरूपता वाले प्रश्न

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
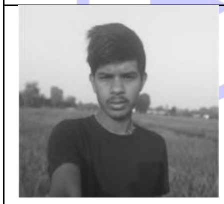	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
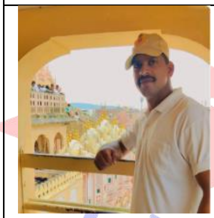	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/hvnbp7

Online order करें – https://shorturl.at/nM368

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO